February, **2016**

ang kirit

A reflection of Radhi Kayastha

akhil bhartiya radhi kayastha sangathan
C-5, 2nd Floor, RK Tower, Plot No 21-22, Sector 4, Vaishali, Ghaziabad, UP
website: www.abrks.com email: info@abrks.com Contact: +91 120 322 3419

ABRKS

अंग किरीट

अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1, अंक : 2, फरवरी 2016

संपादक : अभिनंदन कुमार सिन्हा

एक बहुत जरूरी बात

मनुष्य के जीवनकाल में कई ऐसे मौके आते हैं, जब उन्हें तरह-तरह के रीति-रिवाजों से होकर गुजरना पड़ता है । यह चाहे जन्म के छः दिन बाद उत्सव में मनाया जाने वाला 'छठी' हो, या शादी-ब्याह हो, या फिर श्राद्ध-संस्कार ही क्यों न हो । और हमारे समाज में इन उत्सवों को मनाने का तरीका भी भिन्न-भिन्न होता है । जहां तक राढ़ी समाज में शादी की ही बात हो तो यो अपने आप में एक अनोखी होती है । इस उत्सव में जहां अन्य समाज में होने वाले शादी की रस्में, जैसे हल्दी चुमाई, लग्न, मड़वा, शादी, अष्टमंगला, गौना, बहुभोज आदि तो होते ही है, राढ़ी कायस्थ में 'थुबड़ा खाना' जैसे कई रस्म हैं, जो अनोखे तो होते ही हैं, मजेदार भी होते हैं । लेकिन इसी तरह के कई रस्मों की सही जानकारी या इन रस्मों में प्रयुक्त होने वाले सामानों की सही जानकारी न होने से एक उहापोह की स्थिति बन जाती है । और खासकर ऐसे वक्त में जब हम में से अधिकतर दूर प्रदेशों में बसे हैं, उन्हें इनकी जानकारी बहुत कम ही हो पाती है । इसी कारण से मेरी यह आप सभी पाठक वर्ग से मेरा विनम्र अनुरोध है कि इन विषयों से सम्बन्धित जो भी लेख या जानकारी आप हमें भेज सकें, तो उन्हें हम सम्मानपूर्वक पत्रिका में स्थान देंगे ।

इसी माह मैं एक विवाह समारोह में सम्मिलित हुआ और वहाँ विवाह-उत्सव पर बनाये जा रहे 'खटपूटी' को देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । 'खटपूटी' राढ़ी संस्कृति का अभिन्न अंग रही है, एक ऐसा अंग, जिसके बिना शादी-ब्याह में बनने वाले पकवान आधे अधूरे ही रह जाय । बेटी के ब्याह में डाला सजे, और 'खटपूटी' की सुगंध उससे ना आए, यह तो संभव ही नहीं । लेकिन आधुनिक समाज की भागमभाग वाली जिन्दगी में अब हमसे राढ़ी संस्कृति के स्वाद और संस्कृति का अंग 'खटपूटी' भी हमसे छिनती जा रही है । यह नहीं कि जीवन का भागमभाग ही इसके लिए जिम्मेदार है, अपनी परम्परा रीति-रिवाज के प्रति उपेक्षा भाव भी कम जिम्मेदार नहीं है । जब होगा तो यह चाहिए कि 'खटपूटी' की संस्कृति को आधुनिकता से सजाए जाए । हमारे आधुनिक जीवन में हरेक चीज का मूल्य उसके आर्थिक महत्व पर निर्भर है, तो क्यों नहीं इस पकवान को बाजार के लायक बनाया जाय, बाजार के लायक साज-सज्जा में बंद कर 'खटपूटी' को भी बाजार में उतारा जाए । इससे यह होगा कि राढ़ी संस्कृति को व्यापकता तो मिलेगी ही, भारी अर्थ उपार्जन का मार्ग भी प्रशस्त होगा । और जब यह मार्ग प्रशस्त होगा तो हम आर्थिक तौर पर पिछड़े अपने लोगों को आर्थिक सहायता भी दे सकेंगे । इस पर गंभीरता से सोचने की जरुरत है, क्योंकि अर्थ के बिना जीवन की किसी भी संस्कृति को बचाना कठिन है। अगर हम इस स्वाद को दर्जा दिला पाए, तो घर की चहारदिवारी में लाचार औरतों के जीवन में एक क्रांतिकारी आर्थिक बदलाव ला सकते हैं ।

-अभिनंदन

इस अंक में

■Kids Corner	2
■मेरा गाँव, मेरा देश	4
■व्रत-त्योहार	5
■अंग : एक परिचय	6
■अंग चीरा	7
■विविध	

'अंग किरीट' से जुड़े सभी सदस्य अवैतनिक हैं । इस पत्रिका का लक्ष्य एक ही है–अव्यवसायिक तौर पर साहित्य और समाज की सेवा । किसी प्रकार के विवाद का निपटारा सिर्फ गाजियाबाद (उ.प्र.) में ही होगा ।

Kids Corner

Visit to the World Book Fair

-By Riya Mazumdar

On 14th Jan. 2016 I visited the world Book Fair. The world book fair held in every two years at Pragati Maidan. This year I also visited the world book fair for the first time. I was accompanied with my sister and maternal Uncle and aunt. In this fair, there any many books from the writers of the whole world. Every year there is a Participating country and this time it was China. People who love to read books come here in search of their favorite books from their favorite writers. I also visited the fair in search of books as my favorites writers are Ruskin Bond and Chetan Bhagat, from my place Uttam Nagar, it took almost one hour to reach there. We went by the metro and came to Pragati Maidan Metro Station as the ticket of the book fair was available there. The cost of the ticket was Rs. 20/- per head. We bought the tickets and left for the fair. From the Gate No. 10 of the Pragati Maidan there were many shuttles which were providing their free services to the visitors. We also went forward from the shuttle which dropped us in front of the hall No. 6 and 7. We went inside the hall No. 6 which was the section of the school books, after that we went to the Hall No.7 which was the section for kids. For kids, the books were available like Panchtantra, Snow White and her 40 thieves etc. Then we went to the hall No. 11 which was the section of books related to life history of our leaders. Actors and other big personalities. In this hall we also enjoyed the cultural program performed by the South Indian artists. In the world book fair, I also met our Deputy Chief Minister of Delhi Mr. Manish Sisodia. That meeting with our Deputy CM is unforgettable and a memorable moment for me and my sister my visit to the book fair is an unforgettable visit. I enjoyed a lot in my first visit of Book Fair. "World Book Fair" was an unforgettable and memorable Visit for me.

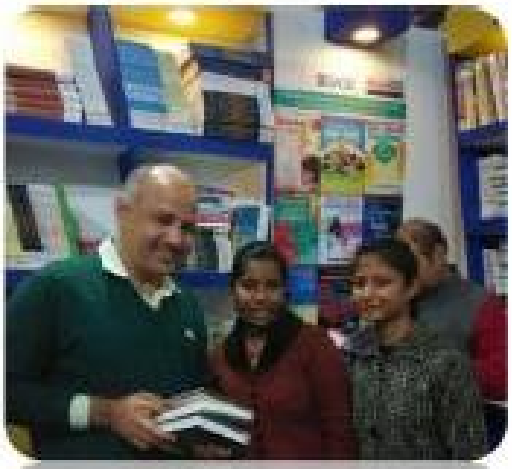

बेलूर : मेरी दृष्टि से

-अंकिता सुप्रिया

हम कहते हैं कि आज इन्सान तरक्की कर रहा है, विज्ञान की वजह से, सभी आज हर कार्य सम्भव हो रहा है। आज घर की सफाई से लेकर । बड़े भवनों के निर्माण कार्य हर जगह हम आधुनिक यंत्रों का उपयोग करते हैं। पर सच तो ये है कि इन्सान तो वहाँ पुर्व जब हमारे पास कोई यंत्र नहीं थे तब ही बहुत तरक्की कर चुका है और इस बात का पता हमें भारत के कला को देख कर ही पता चलता । हमें बहुत गर्व है कि हम भारतीय हैं। जो कला, संस्कृती, विरासत और धरोहरों कि धरती है, और जहाँ हर कला, हर संस्कृती अपने आप में एक अनुठा महत्व रखते हैं। खास कर यहाँ कि वास्तु शिल्प कला जिसमे वास्तु शास्त्र और शिल्प कला दोनों का समावेश होता है। और इसका एक जीता जागता उदाहरण है - " बेलूर " । वैसे तो इस जगह का वर्णन कर पाने मे और इसे देख अपनी खुशी को प्रगट करने मे मैं असमर्थ हूँ, पर फिर भी एक छोटी-सी कोशीश करती हूँ।

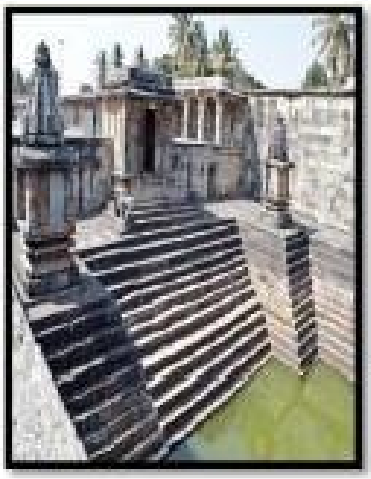

बेलूर कर्नाटक के हासन जिले में यगाची नदी के तट पर स्थित एक छोटा सा शहर है। बेलूर होयसल साम्राज्य प्रारंभिक राजधानी थी। यह बैंगलोर की मेट्रो शहर से लगभग 220 किलोमीटर की दूरी है। बेलूर दक्षिण के बनारस के रूप में माना जाता है इसलिए यह दक्षिण वाराणसी के न से भी जाना जाता है। बेलूर में मुख्य आकर्षण का केन्द्र चेन्नाकेसवा मंदिर है जो भगवान 'चेन्नाकेसव" (सुंदर विष्णु) के लिए समर्पित है। ये मंदिर होयसल वास्तुकला का बेहतरीन उदाहरण में से एक है। इसे 1,117 ईस्वी में तालकाड पर चोल पर अपनी विजय की स्मृति में द्रविड़ शैली में होयसल राजवंश के राजा विष्णुवर्धन ने बनवाया था। कहा जाता है कि इस निर्माण कार्य में पूरे 103 साल लग गए और विष्णुवर्धन के पोते वीर बल्लाला द्वितीय यह कार्य पूरा किया। सबसे पहले जो आँखें देखती हैं, वो है सुंदर सजावटी गोपुरम वाली प्रवेश द्वार जिसे देखकर लगता है की मानो हम किसी भव्य महल में प्रवेश करने जा रहे हैं। प्रवेश करते ही मंदिर का विस्तृत प्रांगण है, बांयी तरफ लैंप पोस्ट है, जो बहुत ऊँचा है (100ft) और दाहिने तरफ जल कुंड। और प्रांगण के बीचों बीच बना है चेन्नाकेसव मंदिर एवं यह चारों दिशाओं से अन्य छोटे छोटे मंदिरों से घिरा है। मुख्य मंदिर के अंदरूनी हिस्सों में प्रवेश के लिए प्रवेश द्वार पर शेर के साथ युद्ध करते हुए " साला " जिसके नाम से इस वंश का नाम होयसला पड़ा उसकी प्रतीमा है। इस युद्ध में दोनों वीरगती को प्राप्त हुए तभी से यह होयसल राजवंश का शाही प्रतीक बना लिया गया। फिर गर्भगृह में 48 खंभे हैं जिनकी शिल्प कला अत्यंत मन मोहक है। यहां अंधेरे में भी आप इन स्तंभों भली भाँती देख सकते हैं, ये बहुत चमकीले हैं और हर स्तंभ अद्वितीय है। किसी पर गहनों की सी कारिगिरी है, तो किसी पर फूल-पत्तियाँ, किसी पर पशु-पक्षं, तो किसी पर देवी-देवताओं कि झलकियाँ। और भगवान चेन्नाकेसव स्वामी की प्रतीमा है। मंदिर की बाहरी दीवार पूरी तरह से शिल्प कला से सुसज्जीत है, जिसे देखते ही आप मंत्रमुग्ध हो जाऐंगे। बाहरी मंदिर के ऊपरी कोनों पर 42 स्त्रियों की प्रतिमाएं हैं और प्रत्येक को अलग अलग रूप में दर्शाया गया है। जिनमें से कुछ अत्यंत आकर्षक है जैसे दर्प सुन्दरी (दर्पण में अपना सौन्दर्य निखारती महिला), 'तोता के साथ महिला', 'शिकारिका', भस्मा-मोहिनी, कहीं नृत्यांगना तो कहीं माँ का वात्सल्य प्रेम, कहीं भोजन पकाते हुए तो कहीं वेद पाठ करते हुए। नीचे के बाहर हाथियों का पंक्ति है और यदि गौर से देखा जाए तो इन्हें भी अलग अलग क्रिया में दिखाया गया है कहां युद्ध करते, तो कहीं प्रेम करते, कहीं वाद्य यंत्र बजाते। इसी प्रकार अश्व और सिंह के भी है। कहीं दसावतार के रूप तो कहीं आदिशक्ति के नौ रूप और भी पुराणों, उपनिषदों और अन्य पौराणिक कहानियों को भी दर्शाया गया है। कहीं रामायण की झलकियाँ तो कहीं महाभारत की झांकी, कहीं कृष्ण की लीलाएँ तो कहीं यशोदा से शिकायत करती गोपियाँ। मंदिर के गर्भगृह में वायु प्रवेश को ध्यान में रखते हुए यहाँ दीवार के कुछ हिस्सों में जाली नुमा कारिगीरिक गढ़े है। चेन्नाकेसव मंदिर के दीवारों में कलाकारों ने चारों युग की जीवन शैली और विशेषताओं को दरसा दिया है। वास्तव में ये मंदिर धर्म के अलावा नैतिक शिक्षा, संगीत और नृत्य सहित हमारे विभिन्न कलाओं को बढ़ावा देता है।

सम्पर्क : द्वारा / प्रदीप घोष, गुमटी नं. 1
भीखनपुर, भागलपुर, बिहार
वर्तमान निवास-बेंगलुरु

मेरा गाँव मेरा देश

लखनपुर

लखनपुर भागलपुर एवं मुंगेर जिलान्तर्गत सुलतानगंज-देवघर मुख्य काँवरिया पथ पर सुलतानगंज से 14 कि.मी. दूर अवस्थित एक ऐसा गाँव जो साधन की सम्पन्नता की दृष्टि से, चाहे वह यातायात व्यवस्था की बात हो, प्राथमिक या उच्च विद्यालयी शिक्षा हो, प्राथमिक चिकित्सा हो, या व्यक्ति की दैनिक जरूरतों से सम्बंधित सुविधाओं की बात हो, वह या तो गाँव में उपलब्ध है या एक कि.मी दूरी पर स्थित असरगंज में सारी सुविधाएँ मौजूद है। क्षेत्रफल और आबादी की दृष्टि से भी यह गाँव बहुत विशाल है। सुल्तानगंज-देवघर मुख्य कांवरिया पथ, गाँव को दो हिस्सों पूर्वी एवं पश्चिमी टोलों में बाँटता है । मुख्य सड़क का पूर्वी भाग, जिसमें राढ़ी कायस्थ के कई टोले जैसे मध्य टोला, उत्तर टोला, दक्षिण टोला, ब्राह्मण टोला आदि भागलपुर जिला में पड़ता है, जबकि पश्चिमी टोला, जिसमें कई दूसरी जातियाँ, जिनमें मुस्लिम एवं कुशवाहा प्रमुख हैं, मुंगेर जिलान्तर्गत आता है । इसी प्रकार विधानसभा क्षेत्रों के आधार पर दोनों हिस्सों को बाँटें तो पूर्वी हिस्सा सुल्तानगंज विधानसभा एवं पश्चिमी हिस्सा तारापुर विधानसभा के अन्तर्गत आता है । राढ़ी कायस्थ की जनसंख्या की बात करें तो यह प्रथम दो तीन गाँव में अपनी जगह बनाता है राढ़ी ब्राह्मण भी यहाँ अच्छी खासी संख्या में है। गाँव एवं इसके आसपास असरगंज, तारापुर एवं सुल्तानगंज में सारी जरूरी सुविधाओं के बावजूद राढ़ी कायस्थों का नौकरी पेशा स्वरूप लोगों को अपने गाँव को छोड़कर देश के विभिन्न स्थानों में निवास का प्रमुख कारण है। दुर्गा पूजा को छोड़कर अन्य दिनों में गाँव के राढ़ी कायस्थ के अधिकतर घरों में ताले ही मिलते हैं । लोगों को अपने गाँव को छोड़कर पदस्थापन वाले जगह पर परिवार सहित रहने का सिलसिला 60 के दशक से शुरू होकर 70 से 80 के दशक तक पूर्ण हो गया । पहले लोग भागलपुर या आसपास के क्षेत्रों में पदस्थापन के दौरान साप्ताहिक छुट्टियों में या राज्य के अन्य क्षेत्रों से महीने में एक बार अपने परिवार से मिलने आते थे। मैं अपने ही परिवार की बात करूं तो मेरे पिताजी श्री नृपेन्द्र चन्द्र घोष बिहार सरकार के मत्स्य विभाग के अपने सेवाकाल में एक-दो वर्ष ही, जब वो भागलपुर में पद-स्थापित थे, माँ को गाँव में रख सके । सहरसा स्थानान्तरण के साथ ही परिवार के साथ बाहर रहने का सिलसिला कालान्तर में दुमका, पूर्णिया, गोड्डा, साहेबगंज से होता हुआ आज ज्योतिविहार, जीरोमाईल, भागलपुर स्थित अपने मकान में अनवरत जारी है । मेरे पिताजी के चार भाइयों में से सिर्फ मेरे बोरो बू स्व. भवेश चन्द्र घोष ने ही अपना सारा जीवन गाँव में बिताया । वह कम्पाउन्डर के रूप में अपनी सेवाएं गाँव को देते रहे। जबकि अन्य दो भाई एवं दिनेश चन्द्र घोष एवं मेरे काका मृगेन्द्र चन्द्र घोष, जो भागलपुर में ही रहते हैं, दोनों अपने वन विभाग की सेवा के दौरान कुछेक वर्षों को छोड़कर बाहर ही रहे । प्राकृतिक सुंदरता की बात करें तो पूर्वी छोर पर खेतो के बीच विद्यालय भवन के साथ लगा एक बड़ा तालाब, जिसे गाँव के लोग लय पोखर के नाम से पुकारते है, बड़ा ही मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करता है। राढ़ी समाज का अपना एक भव्य दुर्गा मंदिर तथा यहाँ आयोजित होने वाली पूजा विस्थापन के इस दौर में लोगों को अपनी जड़ों से जोड़े रखने में कामयाब रहा है। दुर्गा पूजा के अवसर पर गाँव के अधिकतर परिवार उपस्थित होते है। पूजा सम्बन्धित कार्यो के सफल संचालन के लिए इस गाँव में पूजा समिति का गठन 1955 में किया गया है। पूजा संबंधी व्यय हेतु राढ़ी समाज के प्रत्येक कमाऊ सदस्य स्त्री एवं पुरुष द्वारा अपने एक दिन का वेतन स्वेच्छा से इस मद में दिया जाता है। दुर्गा पूजा के दौरान लगातार तीन दिनों तक बच्चों द्वारा बाल मंजूषा की भव्य प्रस्तुति इस सामारोह का एक बड़ा आकर्षण होता है। बाल मंजूषा का जिक्र आते ही मैं अपनी श्रद्धांजली स्वर्गीय सुधांशु कुमार मित्र को देता हूँ, जिनके द्वारा लगभग तीस वर्ष पूर्व पुष्पित और पल्लवित यह कार्यक्रम आज एक वट वृक्ष का रूप ले चुका है। दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन और शोभा यात्रा का जिक्र मैं खास तौर पर करना चाहूँगा। प्रतिमा विसर्जन के लिए हम लोग लगभग 3 कि.मी. दूर रणगाँव जाते है । गाँव के युवक कंधे पर मूर्ति को लेकर कीर्तन, भजन-नृत्य करते हुए चलते है, इस शोभा यात्रा में लगभग सारे लोग सम्मिलत होते है। रणगाँव जो कि रत्नेश्वर धाम शिवमंदिर के लिए विख्यात है । अतः विसर्जन के साथ ही शिव की पूजा के लिए लोग खासे उत्साहित रहते है। विसर्जन के बाद रणगाँव की दुकानों में विभिन्न आयु समूहों की विभिन्न टोलियों द्वारा मुढ़ी, घुगनी, कचरी, जलेबी का आनंद दुर्गा पूजा को अविस्मरणीय बनाता है, तथा इन यादों को दिलों में सजोते हुए अगले साल गाँव आने को बाध्य करता है। तो यह है मेरे गाँव लखनपुर का संक्षिप्त परिचय।

\- तुषार कांत घोष

पिता-श्री नृपेन्द्र चंद्र घो□ा मध्यटोला, लखनपुर, वर्तमान-उत्तम नगर दिल्ली

व्रत-त्योहार

शिवरात्री व्रत

बहु काल पुरे वाराणसी ते ऐक व्याध बास कोरतो। दिन रात से सुधु जीव होत्या कोरेई बेड़ाते । सेई व्याध ऐक दिन बोने शिकार कोरते बेड़िये छे। सारा दिन घुरे घुरे ओनेक पोशु पाखी मेरे छे । तार पोरे सोंध्या घोनिये आसतेई से बाड़ीर पोथे रओना दिलो ।

किछु दूर आसतेई रात्रि होय गालो। सारा दिन किछु खाय नी । तार ओपोर से दिन पोरिश्रम कोरे छे विस्तर । पोशुपाखीर प्रोकाण्ड दूटि बोझा होये छे। से आर चोलते पारछे ना। कि आर कोरे ऐकटि गाछ तोला देखे से भावलो। एखून आर जाइया सोंभोव नेई । एखानेई रात काटाते होय। किन्तु एईभावे गाछेर नीचे थाका सोंगोत नेई । हिंस्र जानोयार आसते पारे ।

काजेइ प्रोथमे से पोशुपाखीर बोझा दूटो के गाछेर डाले झुलिये बेंधे राखलो । तार पोरे निजे सेई गाछेर ओपोरे उठे बोसे रयलो । एई गाछ टी छिलो एकटि बेल गाछ आर सेई गाछेर नीचे छिलो सिवेर एकटि लिंग मूर्त्ति। व्याध एपास-ओपास कोरार सोमोय सिसिरेर जोले भेजा एकटि बेलपाता गाछ थेके खोसे एई लिंग मूर्त्तिर माथाय पोड़लो ।

सेई दिनटि छिलो शिवरात्रिर पुण्य तिथि । शिवेर माथाय बेलपाता पोड़ते शिव तो महाखुशी । एई व्याध निजेर ओजान्तेई शिव चतुर्दशी व्रोतेर फोल पेये गेलो । पोर दिन भोर बेला सेई व्याध गाछ थेके नेमे मोरा पोशुपाखि गुलि निये बाड़ीते गिये हाजिर होलो ।

व्याधेर बोउ रान्ना कोरे ताके खावार जोन्यो डाकलो। व्याध चान कोरे खेते बोसलो, आगेर दिन पुरो उपवास गेछे, तारओपोर पोरिश्रम । ताड़ा-ताड़ि से खावार मुखे तुलते गेलो, एमोन सोमोय ऐक अतिथि एसे हाजिर । व्याध मुखेर ग्रास नामिये रेखे हठात की खेयाले अतिथि आप्यायो ने बेड़िये एलो । तार पोरे अतिथि के योत्न सोत्कारे खायिये शेषे निजे ओन्न जोल मुखे दिलो ।

व्रोतेर फोल तो से आगेई पेये गिये छिलो, एबार ओतिथि के खाइये शेषे निजे खाउयार दोरूण तार पोरिणाम काजटि ओ आपना थेकेई होय गेलो ।

किन्तु एर पोरे ऐक आश्चर्य काण्ड । व्याध भीषोण भावे ओदुस्थ होये पोड़लो शेषे मोरेउ गेलो । योम दूतेरा ताकेनेबार जोन्यो एसे हाजिर । ओ दिके आबार एसे हाजिर होयेछे शिवेर चेलारा । दुई दोलेय दारुण युद्ध बेधे गेलो । शेष पोर्यौन्तशिवेर चेलारा योमेर दूत देर हौठिये ताके निये एलो कैलाशे । योमेर दूतेरा सेखान पोर्यन्त ओ धाओया कोरलो।

पाहाराय छिलो नोन्दी । से तादेर व्याधेर शिवरात्रिर व्रोत कोरार कोथा बोललो । तोखोन तारा मुख गोमड़ाकोरे जोमेर काछे फिरे गेलो । योम सोब सुने बोललेन-''ह्यां, जे लोक शिवेर ओथवा बिष्णुर भोक्त किंवा जे लोक शिव चतुर्दशीव्रोत कोरे किंवा जे लोक बारानसी ते मोरे तार ओपोर आमार कोनो ओधिकार थाके ना ।'' तार पोर थेके एई व्रोतेर कोथा सोकोल देशे छोड़िये पोड़लो ।

-वसुन्धरा
मकान नं. 304/22, शक्तिनगर, गुड़गांव, हरियाणा

पत्रिका में आलेख भेजने वाले सभी लेखकों से अनुरोध है कि वे आलेख भेजते समय रेगुलर हिन्दी या अंग्रेजी फान्ट का प्रयोग करें, यूनल फान्ट का बिल्कुल भी उपयोग न करें एवं यथासंभव लेख एमएस वर्ड में ही टंकित कर भेजें, इससे उनके आलेख के त्रुटिपूर्ण होने की संभावना कम से कम रहेगी । धन्यवाद

अंग : एक परिचय

अब तक आपने पढ़ा कि अंग महाजनपद का नामकरण कैसे हुआ और इसका भौगोलिक विस्तार कहाँ से कहाँ तक था । साथ ही साथ हमने यह भी देखा कि अंग लिपि कितनी प्राचीनतम लिपियों में से एक है । इस अंतिम अंक में हम यह पायेंगे कि अंग की भाषा 'अंगिका' का साहित्य कितना प्राचीनतम और वृहत है-संपादक

गतांक से आगे......

<u>अंगिका भाषा के आदि कवि (पहली सदी से तेरहवीं सदी तक)</u>

१. हिन्दी के प्रथम कवि के रूप में मान्य सरहपाद की जन्मभूमि भागलपुर का राज्ञी/रानी दियारा/है—पं० राहुल सांकृत्यायन,

दोहा कोष/पृ० १०

२. विक्रमशिला बौद्धविहार के सिद्ध कवि विनयश्री की कविताओं के क्रियापद भागलपुर अंगक्षेत्र की भाषा के क्रिया से साम्य रखते हैं।

—राहुल सांकृत्यायन/दोहा कोश, पृ० ३७—३८

३. चौरासी सिद्धों में शबरपा, धर्मपा, चम्पपा, चेलुकपा, मेकोपा, लुचिकपा, चर्मटीपा, पुतुलिया, जयानन्त आदि अंग जनपद के ही कवि थे

—रा. सांकृत्यायन/पुरातत्व निबंधावली, पृ० १२०—१२५

४. अंगिका के प्रसिद्ध सिद्ध कवि कन्हपा कर्णाटक के नहीं, अंग जनपद के कटिहार क्षेत्र के थे—डॉ. अमरेन्द्र/आंगीप्रभा

५. महापंडित और सिद्ध कवि दीपंकर श्रीज्ञान तिब्बती ग्रन्थों के अनुसार भागलपुर के निवासी थे और वास्तव में श्रीज्ञान भागलपुर के ही रहनेवाले थे ।

—राहुल सांकृत्यायन/तिब्बत में सवा वर्ष, १९४८ ई०/पृ० २०६

६. सभी सिद्ध कवियों की कविताओं में आधुनिक अंगिका भाषा के प्राचीन रूप सुरक्षित हैं जो आधुनिक अंगिका के एकदम निकट हैं ।

—डॉ. डोमन साहु समीर/आंगीप्रभा भाषा-विशेषांक

<u>अंगिका भाषा एक सम्पूर्ण भाषा है</u>

<u>(क) भाषा का आधार विशिष्ट ध्वनियां :</u>

अंगिका भाषा की अपनी विशिष्ट ध्वनियाँ हैं- इसमें ' ॅ ' एवं ' ॉ' प्रमुख हैं ।

(ख) <u>भाषा का द्वितीय आधार लिपि : अंगिका लिपि की प्राचीनता और अंग लिपि</u>

१. प्रसिद्ध बौद्धग्रन्थ ''ललित विस्तार'' की लिपि-शाखा में अंग लिपि चौथे स्थान पर है, जबकि विदेह लिपि चालिसवें स्थान पर उल्लखित हैं ।

अंगिका आन्दोलन के पूर्व, अंगिका कैथी लिपि में ही लिखी जाती रही है । अठारहवीं सदी में रचित विषहरी लोकगाथा काव्य कैथी में ही सुरक्षित पड़ी है—भागलपुर के चम्पा नगर के विषहरी मन्दिर में । आधुनिक समय में राष्ट्रीयता के आग्रही अंगिका-भाषियों ने अंगिका-लेखन के लिए देवनागरी लिपि को स्वीकार कर लिया है, और सभी आधुनिक अंगिका पुस्तकों का प्रकाशन देवनागरी में ही हुआ है, हो रहा है ।

<u>(ग) भाषा का तृतीय आधार-उपबोली : अंगिका भाषा की उप बोलियाँ</u>

श्री प्रभात रंजन सरकार, डॉ० पाण्डेय, डॉ० तेज नारायण कुशवाहा, डॉ० डोमन साहु समीर जैसे भाषा वैज्ञानिकों ने केन्द्रीय अंगिका की चार बोलियां स्वीकार की हैं—

1. घरम्पुरिया, 2. मुंगेरिया,
3. गिद्धौरिया, 4. देवघरिया

इन्हें ही कुछ भाषा विद्वानों ने उतराही, परछाही, पर्वाही और दखनाही अंगिका भी कहा है ।

<u>(ग) भाषा का आधार शब्द-सम्पदा : अंगिका भाषा के प्रकाशित शब्दकोष</u>

१. अंगिका-हिन्दी शब्दकोश : सं० डॉ० डोमन साहु समीर/साहित्य अकादमी, हैदराबाद

२. अंगिका शब्दावली (अंगिका संस्कारगीत) : सं० पाण्डेय/शर्मा/ बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना

<u>(घ) भाषा का आधार मौखिक साहित्य : अंगिका का विशाल लोक साहित्य</u>

<u>प्रकाशित प्रमुख अंगिका लोकगाथा-काव्य</u>

१. बिहुला
२. सलहेश भगत
३. बिसुरौथ
४. ज्योति तपस्या
५. हरिया डोम
६. हिरनी बिरनी
७. ज्योति तपस्या
८. खुंदुमाली-चेणी
९. लोरिक
१०. कमला मैया
११. राजा जयमाल
१२. बुचली घटमा

अंगधारा

स्वामी विवेकानन्द केरौ १५३वां जयन्ती पर

आय स्वामी विवेकानन्द के पूजा आकि हुनकौ नामौं पर भीड़ जमा करै के बदला, जरूरी इं छै कि हम्में हुनकौ संघर्ष, जे संघर्ष देश वास्तें छेलै, देश के सांस्कृतिक प्रतिष्ठा रौ रक्षा लै छेलै, देश के जन वास्तें छेलै, आरो देश के वर्ण-व्यवस्था के विरुद्ध छेलै,कैं आपनौं जीवन में उतारै के कोशिश करौं। इं कोशिश आदमी कैं सबसें पहलें अपना सें शुरु करना छै । हम्में अपना में ऊ शक्ति लानौं, जे शक्ति पावी कैं स्वामी विवेकानन्द नें अपनौं देही के पचासो रोग कैं, लक्ष्य पावै लांय, मौत देतैं रहलै । आयकौ परिवेश में हुनकौ कहलौं उपदेश बड़ा प्रासंगिक छै ।

१. जबें तोहें अपना आप कैं देह बूझै छौ,तैं तोहें विश्व सें अलग छौ; जबें तोहें अपना आप कैं जीव बूझै छौ, तबें तोहें अनन्त आगिन के एकटा लुत्ती छेकौ; जबें तोहें अपना आप कैं अनन्त स्वरूप बूझै छौ, तबें तोहें विश्व छेका ।

२. जब तांय तोरा आपनैं पर विश्वास नै हुएँ पारौं, तोहें परमात्मा पर विश्वास नै करैं पारौं।

३. जबें तोहें एक पन्थ बनावै छौ, तबें तोहें विश्व-बंधुत्व सें कटी जाय छौ । जे सच्चा विश्वबन्धुत्व के भाव राखै छै, ऊ बेसी बोलै नै छै, ओकरौं काये जोर दै कैं बोलै छै ।

४. सत्य लेली सबसें कुछ तेजलौं जावें पारैं, मतर कोनौं चीज लैं सत्य कैं नै छोड़लौं जावें पारैं, ओकरौं बलि नै देलौं जावें सकैं ।

५. जेकरौं हृदय के किताब खुली चुकलौं छै, ओकरा कोय किताब के जरूरते नै छै । ऊ सब के महत्व बस एतनै भर छै कि ऊ हमरा में लालसा जगावै छै । बाहरी किताब तैं आय आदमी रौ अनुभव भर होय छै ।

६. आपनौं तौर पर हम्में वेदौं में सें ओतै स्वीकार करै छियै,जे बुद्धि सम्मत छै.....मनूं एक ठियां कहलैं छै वेदौं में यहा अंश वेद छेकै, जे बुद्धिग्राह्य आरो विवेक सम्मत छै । हमरौं कै एक टो दार्शनिकों यहा दृष्टिकोण अपनैनें छै ।

७. दुनियां के सबसें धर्मग्रन्थों में खाली वेद इं घोषणा करै छै कि वेदाध्ययन गौण छेकै । सच्चा अध्ययन तैं ऊ छेकै, जैसें अक्षरब्रह्म प्राप्त हुएँ । आरो ऊ नै तैं पढ़वौं छेकै, नै विश्वास करवौं, नै तर्क करवौं छेकै । बलुक ऊ तैं अतिचेतन ज्ञान आकि समाधि छेकै ।

८. हर आदमी कैं, अपनौं पत्नी छोड़ी, आन सब जनानी कैं माय के समाने बूझना चाही ।

९९. धर्म ऊ वस्तु छेकै, जेकरा सें पशु मनुष्य लांय, आरो मनुष्य परमात्मा लांय उठै सकैं । ■■

-डॉ. अमरेन्द

(लेखक सौ के करीब पुस्तकों के रचयिता एवं अंगिका-हिन्दी के कवि हैं)

नालन्दा खुला विश्वविद्यालय लगभग हजार वर्ष पुरानी कैथी लिपि को संरक्षित करने का प्रयास कर रहा है, जो अंगिका, भोजपुरी, मगही, मैथिली, बज्जिका की भी लिपि है । ब्रिटिश काल में इसी लिपि में सरकारी काम और जमीन का दस्तावेज भी लिखा जाता था । सन् १५४० ई में बादशाह शेरशाह ने इस लिपि को अपने न्यायिक कार्यों के लिए को संरक्षण दिया था । अंगिका महाकाव्य बिहुला विषहरी प्राचीन ग्रंथ सम्पूर्ण रूप से कैथी लिपि में लिखा गया था कहा जाता है इस लिपि का आरम्भ राढ (गौड़) प्रदेश का राढ (गौड़) कायस्थों से हुआ । अंग कैथी लिपि का एक नमूना नीचे प्रकाशित है । आप सभी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि इस विलुप्त होती लिपि के बारे में जो भी जानकारी है, वह हमारे साथ साझा करें । हम उस पत्रिका में स्थान देंगे ।